PATNA WOMEN'S COLLEGE AUTONOMOUS 1940

Hindi
Explore–Journal of Research
ISSN 2278 – 0297 **(Print)**
ISSN 2278 – 6414 **(Online)**
UGC Approved List of Journals No. - 64404
© Patna Women's College, Patna, India
http://www.patnawomenscollege.in/journal

हिंदी के विविध रूप

• अदिती कुमारी • काजल कुमारी • गिन्नी कुमारी
• दीपा श्रीवास्तव

Received : November 2018
Accepted : March 2019
Corresponding Author : Deepa Srivastava

Abstract : हिंदी मातृभाषा, राजभाषा, संपर्कभाषा एवं साहित्यिक भाषा होने के साथ-साथ तकनीकी, कार्यालयी, विज्ञान और वाणिज्य की भाषा भी बन गई है। वर्तमान परिवेश में यह बाजार की भी भाषा है और विदेशों में भी इसका प्रचार-प्रसार है।

भाषा जितने विषयों के लिए प्रयुक्त होती है, उतने ही स्वरूप या विविध रूप उभरकर आते हैं। हिंदी का स्वरूप भी ऐसा ही है।

भारतीयों को भारतीयता और मानव-मानव को आत्मीयता से जोड़ने वाली हिंदी के भी विविध रूप हैं जो एक-दूसरे के पूरक हैं और हिंदी के शब्द-भंडार को समृद्ध बनाने में सहायक हैं। वे हैं- मानक हिंदी, बोलचाल की हिंदी, वाणिज्य-व्यापार की हिंदी, कार्यालयी हिंदी, शास्त्रीय हिंदी, साहित्यिक हिंदी, संसदीय हिंदी, खेलकूद की हिंदी, जनसंचारीय हिंदी, सामाजिक संचार माध्यमों की हिंदी इत्यादि।

इंटरनेट पर भी हिंदी का प्रयोग उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है। लेकिन ऐसा नहीं है कि हिंदी के विकास का मार्ग निष्कंटक रहा है। इसके बदलते स्वरूप के साथ अनेक समस्याएँ भी उभरकर सामने आई हैं, जिनके समाधान के लिए दृढ़ संकल्प और सतत प्रयास की आवश्यकता है। आज समय की माँग है कि भाषायी आधार पर हो रहे भारत के विभाजन का उन्मूलन कर देश की सांस्कृतिक एकता को मजबूत किया जाए और इस कार्य का सफल संपादन सिर्फ और सिर्फ हिंदी ही कर सकती है।

संकेत शब्द (Keywords) : हिंदी, संपर्कभाषा, विविध रूप, सांस्कृतिक एकता।

अदिती कुमारी
बी० ए०-तृतीय वर्ष (2016-2019), हिन्दी (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

काजल कुमारी
बी० ए०-तृतीय वर्ष (2016-2019), हिन्दी (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

गिन्नी कुमारी
बी० ए०-तृतीय वर्ष (2016-2019), हिन्दी (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

दीपा श्रीवास्तव
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, पटना वीमेंस कॉलेज,
बेली रोड, पटना – 800 001, बिहार, भारत
E-mail : deepsri24@gmail.com

भूमिका :

भाषा समाज की आधारशिला होती है। यह मानसिक संकल्पना, सामाजिक यथार्थ और संप्रेषण की इकाई होने के साथ-साथ राष्ट्रीय प्रतीक भी है। किसी भी राष्ट्र की भाषा उस राष्ट्र की सांस्कृतिक चेतना और साहित्यिक परम्परा का संवाहक होती है।

हिंदी हमारी मातृभाषा, राजभाषा एवं संपर्कभाषा है। यह साहित्य की भाषा होने के साथ-साथ तकनीक, विज्ञान, वाणिज्य और बाजार की भाषा भी बन गई है। विदेशों में भी इसका प्रचार-प्रसार है। जनसंचार के माध्यमों का तीव्र गति से विकास होने के उपरांत यह सबसे लोकप्रिय भाषा बन गई है। यह एक जीवित और सशक्त भाषा है। इसने अन्य भाषाओं की ध्वनियों और शब्दों को अपने अंदर आत्मसात कर अपने

शब्द-भंडार एवं अभिव्यक्ति को समृद्ध बनाया है तथा राष्ट्रभाषा होने का गौरव प्राप्त किया। लेकिन राष्ट्रभाषा होने के बावजूद यह पूर्णरूपेण उपेक्षित है। वर्तमान सामाजिक परिदृश्य में हिंदी को समुचित सम्मान प्राप्त हो, यह समय की माँग ही नहीं अनिवार्यता भी है।

उद्देश्यः

सामान्य : अत्यंत व्यापक स्तर पर प्रयुक्त होते हुए भी हिंदी युवाओं की पहली पसंद नहीं है। आज की युवा पीढ़ी ही नहीं समाज का हर वर्ग इसे तिरस्कार तथा उपेक्षा की दृष्टि से देखता है। हिंदी के प्रति जनमानस की इसी मानसिकता को सकारात्मक दिशा प्रदान करने का प्रयास करना इस परियोजना 'हिंदी के विविध रूप' का सामान्य उद्देश्य है।

विशिष्ट : समाज में प्रचलित हिंदी के विविध रूपों पर प्रकाश डालते हुए हिंदी से जुड़ी मूलभूत समस्याओं को उजागर कर उनके निदान की दिशा में समुचित प्रयास करने का संदेश देना इस परियोजना का विशिष्ट उद्देश्य है।

अध्ययन-पद्धतिः

परियोजना के लिए शोध-प्रविधि की द्वितीयक पद्धति का प्रयोग किया गया है। तथ्यों के संग्रह के लिए पूर्व शोध ग्रंथों, संबंधित पुस्तकों एवं पत्र-पत्रिकाओं की मदद ली गई है।

हिंदी शब्द का संबंध संस्कृत शब्द सिंधु से माना जाता है। फारसी में सिंधु को हिंदु कहा जाता है और इसी से हिंदी शब्द की उत्पत्ति हुई है। यह हिंदी उस हिंद देश की भाषा का नाम है, जो सिंधु नदी के आस-पास का प्रदेश था, जिसे सिंध के नाम से जाना जाता था। हिंदी को संस्कृत, पालि और प्राकृत की उत्तराधिकारिणी माना जाता है, जिसे धार्मिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक और राजनीतिक परिस्थितियों ने वृहत क्षेत्र में पुष्पित-पल्लवित होने का सुअवसर प्रदान किया। इसके व्यापक स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए महावीर प्रसाद द्विवेदी ने कहा है, '' **'हिंदी' शब्द कई अर्थों का बोधक है।''**

(द्विवेदी 53)

हिंदी साहित्य के इतिहास में यह अपने विस्तृत अर्थ में ब्रज, अवधी, डिंगल, मैथिली और खड़ीबोली का द्योतक है।

भाषा-विज्ञान में हिंदी ब्रज, खड़ीबोली, बुंदेली, हरियाणी, कन्नौजी, अवधी और छत्तीसगढ़ी का नाम है।

वैसे तो हिंदी शब्द का अर्थ अत्यंत व्यापक है, लेकिन अपने संकुचित अर्थ में यह खड़ीबोली साहित्यिक हिंदी के रूप में जानी जाती है, जो राजभाषा, राष्ट्रभाषा, संपर्कभाषा और जनसंचार माध्यमों की भाषा आदि के रूप में व्यापक स्तर पर प्रयोग में लाई जा रही है। यह अब विज्ञान, तकनीक, वाणिज्य, विधि आदि की भी भाषा है, जिसके कारण पारिभाषिक शब्दों की बहुत आवश्यकता पड़ती है। इसकी पूर्ति के लिए अनेक नए शब्द बनाए गए तथा अनेक शब्द अंग्रेजी, संस्कृत आदि से लिए गए। ऐसे शब्दों की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि होती जा रही है और हिंदी का शब्द-भंडार नए शब्दों से समृद्ध होकर अधिक व्यापक होता जा रहा है। भाषा जितने विषयों के लिए प्रयुक्त होती है, उतने ही स्वरूप या विविध रूप उभरकर आते हैं। हिंदी का स्वरूप भी ऐसा ही है। पहले वह केवल बोलचाल की भाषा थी, फिर वह साहित्यिक भाषा बनी तो उसका साहित्यिक रूप विकसित हो गया। डॉ0 भोलानाथ तिवारी के अनुसार - **''किसी भाषा के प्रचार क्षेत्र में जैसे-जैसे विस्तार होता है, उसके एकाधिक रूप विकसित होने लगते हैं।''**

(तिवारी 16)

हिंदी के जो विविध रूप आज प्रचलित है, उनमें मुख्य हैं-

1. मानक हिंदी
2. बोलचाल की हिंदी
3. वाणिज्य - व्यापार की हिंदी
4. कार्यालयी हिंदी
5. शास्त्रीय हिंदी
6. साहित्यिक हिंदी
7. संसदीय हिंदी
8. खेलकूद की हिंदी
9. जनसंचारीय हिंदी - सिनेमा, टेलीविजन, विज्ञापन।
10. सामाजिक संचार माध्यमों की हिंदी

1. **मानक हिंदी :** केन्द्रीय हिंदी निदेशालय ने हिंदी वर्णमाला और हिंदी वर्तनी का मानकीकरण किया

है, जो इसे जटिलता से सरलता की ओर ले जाता है। राष्ट्रीय शैक्षणिक और अनुसंधान परिषद् (NCERT) ने अपनी पाठ्यपुस्तकों में हिंदी के इसी रूप का प्रयोग किया है। इस प्रकार मानक हिंदी हिंदी के विभिन्न रूपों में सर्वमान्य रूप है। वह रूप पूरी तरह सुनिश्चित और सुनिर्धारित है तथा इसमें गतिशीलता भी है। आकाशवाणी एवं दूरदर्शन पर इसी हिंदी में समाचार प्रसारित होते हैं। प्रतिष्ठित समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं में भी हिंदी के इसी रूप का प्रयोग होता है।

2. **बोलचाल की हिंदी :** बोलचाल की भाषा सामान्य भाषा के अंतर्गत आती है, जिसका प्रयोग-क्षेत्र अत्यंत विस्तृत होता है। जब कई बोलियों का आपसी संपर्क होता है तब बोलचाल की भाषा का निर्माण होता है। यह प्रेम, भाईचारे तथा हमारी संस्कृति की भाषा है। अनेकता में एकता भारतीय संस्कृति की अन्यतम विशेषता है। इस कारण इसमें भाषायी अनेकरूपता का दृष्टिगत होना भी स्वाभाविक है।

   आजकल बोलचाल के लिए एक अन्य प्रकार की हिंदी भी व्यवहृत हो रही है, जिसे मिश्रित हिंदी कहा जा सकता है। इस हिंदी में क्षेत्रीय शब्दों के साथ लक्षक, व्यंजक शब्द तो आते ही हैं, शब्दों का प्रयोग बिल्कुल अलग अर्थ में भी होता है। जैसे- बाट लगाना, रायता फैलाना, दिमाग का दही जम जाना आदि।

   'चलेगा' का प्रयोग अच्छा है के अर्थ में।

   'अरे यार' का प्रयोग संबोधन के स्थान पर न होकर चिड़चिड़ाने के अर्थ में।

3. **वाणिज्य-व्यापार की हिंदी :** वाणिज्य और व्यापार के क्षेत्र में हिंदी के प्रयोग में दिन-प्रतिदिन वृद्धि हो रही है।

   बाजार समाचार के कुछ प्रमुख वाक्यांश-

   बरसाती सामानों का कारोबार मंदा

   सोना उछला, चाँदी लुढ़की

   दालें गरम, तिलहन नरम

   गेहूँ के भाव टूटे, चावल तेज।

   उपर्युक्त उदाहरणों में मंदा, उछलना, लुढ़कना, गरम, नरम, टूटना, तेज आदि शब्दों तथा क्रियाओं का अपना एक विशिष्ट महत्त्व है और इस क्षेत्र में इनका अर्थ सुगम एवं सुनिश्चित है।

4. **कार्यालयी हिंदी :** दैनिक कामकाज में कार्यालयों में प्रयुक्त होने वाली हिंदी कार्यालयी हिंदी कही जाती है। प्रशासनिक कार्य आम जनता से संबंधित होता है, इसलिए यह आवश्यक है कि इसमें ऐसी भाषा का प्रयोग किया जाए, जो प्रयुक्ति एवं बोधगम्यता की दृष्टि से सरल, स्पष्ट, सुबोध और औपचारिक हो।

5. **शास्त्रीय हिंदी :** संगीत शास्त्र, काव्यशास्त्र, भाषाशास्त्र, दर्शनशास्त्र, योगशास्त्र, विधिशास्त्र आदि में जिस हिंदी का प्रयोग होता है, वह शास्त्रीय हिंदी के अंतर्गत आती है।

   उदाहरण- O;kdj.k dk ^fØ;kfo'ks"k.k*] n'kZu dk ^v}Sr*] ukV~;'kkL=k dk ^izdjh* ;k xf.kr dk ^n'keyo* vkfn blh izdkj ds 'kCn gSaA

6. **साहित्यिक हिंदी:** यह संवेदना, सौंदर्य और चमत्कार की भाषा है और भावनाओं तथा संवेदना को जगाती है। इसके अंतर्गत कविता, कहानी, कला तथा साहित्य की विभिन्न विधाओं की भाषा आती है। हिंदी की अनेक साहित्यिक कृतियाँ साहित्यिक हिंदी का उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

7. **संसदीय हिंदी :** संसद और विधान मंडल की कार्यवाहियों में हिंदी का जो रूप प्रयुक्त होता है, वह संसदीय हिंदी के अंतर्गत आता है। विधेयक, प्रस्ताव, बजट, सत्र आदि संसदीय हिंदी की शब्दावली है।

8. **खेलकूद की हिंदी :** खेलकूद की भाषा संवादात्मक होती है। इसमें भाषा के कुम्हार को ऐसी भाषा गढ़नी होती है, जो श्रोता को प्रभावित करने के

की भाषा में छोटे और सटीक वाक्यों का प्रयोग देखने को मिलता है।

उदाहरण- /ksuh ds /qja/j] igys gh vksoj esa rxM+k >Vdk] Vsful esa lksuk] dCkM~Mh esa pk¡nh vkfnA

9. **जनसंचारीय हिंदी :** जनसंचार के सभी माध्यमों में हिंदी के अलग-अलग रूपों का प्रयोग होता है, जिनमें पर्याप्त भिन्नताएँ मिलती है। ये विभिन्नताएँ हिंदी के विकास की स्तंभ हैं, जो इसे विश्वव्यापी स्वरूप प्रदान करती हैं। इस प्रसंग में सुधीश पचौरी ने कहा है- ''हिंदी को खतरा पैदा हो रहा है।... लेकिन तथ्य एकदम अलग बात कहते हैं। तथ्य यह है कि हिंदी लगातार बढ़ रही है, फैल रही है और वह विश्वभाषा बन चली है। उसकी 'रीच' हर महाद्वीप में है और उसका बाजार हर कहीं है।''

(**पचौरी 23**)

मुद्रित माध्यम : इसके अंतर्गत समाचार पत्र, पत्रिकाएँ और पुस्तकें आदि आती हैं।

समाचार पत्रों की भाषा में सूचनात्मकता, वस्तुपरकता, तथ्यात्मकता और सरलता होती है। इसे पाठकों का विशाल वर्ग पढ़ता है, जिसमें भाषा-ज्ञान, अभिरूचि और संस्कारों के भिन्न स्तर होते है।

उदाहरण : ''अनंत यात्रा पर अटल''

..... पर यादों में रहेंगे।

(हिन्दुस्तान 17 अगस्त 2018 1)

कितनी भावोन्मुख भाषा है, भाव-विभोर कर देने वाली।

दृश्य माध्यम : यह जनसंचार का अत्यंत महत्वपूर्ण माध्यम है। इसके द्वारा संप्रेषण के कई रूप हमारे सामने आते है। इनमें प्रमुख हैं- सिनेमा, टेलीविजन और विज्ञापन।

(क) सिनेमा : संचार के दृश्य माध्यमों में सिनेमा और टेलीविजन सशक्त एवं सर्वव्यापी हैं। यह बात सर्वविदित है कि वर्तमान परिवेश में भारतीय सिनेमा विकासशील हिंदी भाषा की उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर रहा है।

इस संदर्भ में सुधीश पचौरी का कथन द्रष्टव्य है -

''मनोरंजन उद्योग के ग्लोबल बाजार ने बताया है कि बॉलीवुड की फिल्मों और गानों की धुनों को जो लोग भाषा की दृष्टि से नहीं समझते हैं, वे भी उसकी सांस्कृतिक संरचनाओं के प्रभाव में रहते हैं।... इस मामले में हिंदी फिल्मों ने जो काम किया है, वह किसी राजनीतिक दल या आन्दोलन ने नहीं किया। यह मनोरंजन उद्योग का एक खामोश हस्तक्षेप है, जो भाषा के क्षेत्र में हुआ है।''

(पचौरी 29)

भारतीय सिनेमा हमारे समाज के यथार्थ का सर्वाधिक सशक्त माध्यम है। हिंदी फिल्मों की भाषा साहित्यिक हिंदी नहीं अपितु **'भावनाओं की भाषा'** है। हिंदी भाषा को समृद्ध करने में हिंदी फिल्मों का अद्वितीय योगदान है। इन फिल्मों ने हिंदी की विविधता को अनेक आयाम भी प्रदान किए हैं।

सन् 1975 ई0 की फिल्म **'चुपके-चुपके'** में हिंदी का खूब महिमा मंडन किया गया था। इसमें धर्मेन्द्र द्वारा प्रयोग की गई शुद्ध हिंदी का एक नमूना -

''...अब प्रश्न यह है कि आपलोग निम्नावतरण करेंगे या वो लोग उर्ध्वागमन करेंगे।''

हिंदी फिल्मों के कुछ अविस्मरणीय संवाद-

''हम सब तो रंगमंच की कठपुतलियाँ है, जिनकी डोर ऊपर वाले के हाथ में बंधी है।''

(आनंद)

''हम जहाँ खड़े हो जाते हैं, लाईन वहीं से शुरू हो जाती है।''

(कालिया)

''तारीख पर तारीख, तारीख पर तारीख, तारीख पर तारीख मिलती रही है लेकिन इंसाफ नहीं मिला माई लॉर्ड, मिली है तो सिर्फ यह तारीख।''

(दामिनी)

यह संवाद हमारी न्याय-व्यवस्था पर करारा प्रहार तो है ही, इसमें तारीख शब्द की आवृत्ति भाव और भाषागत चमत्कार भी उत्पन्न करती है।

हिंदी फिल्मों के शीर्षक में भी शुद्ध हिंदी और सूक्तियों का प्रयोग देखने को मिलता है।

जैसे- 'सत्यम् शिवमं सुंदरम्', 'सत्यमेव जयते'।

विशाल भारद्वाज द्वारा शेक्सपीयर के नाटकों पर बनाई गई फिल्मों के नाम भी जब हिंदी में रखे गए तो उन्हें मूल नाम के सदृश बनाने का प्रशंसनीय प्रयास किया गया।

जैसे- ओथेलो - ओंकारा, मैकबेथ-मकबूल, हैमलेट-हैदर।

हिंदी सिनेमा की भाषा को सहज एवं दर्शकों की रूचि के अनुरूप बनाने में Hinglish का भी जमकर प्रयोग होता है। यह मिश्रित रूप फिल्मों के शीर्षक ही नहीं अपितु संवाद में भी देखने को मिलता है।

जैसे-

शीर्षक - चक दे इंडिया, जब वी मेट, लव आजकल।

संवाद - ''Picture अभी बाकी है मेरे दोस्त''

(ओम शांति ओम)

''पुष्पा। hate tears..... इन्हें पोछ डालो।

(अमर प्रेम)

हिंदी फिल्मों में क्षेत्रीय भाषा का प्रयोग भी खुलकर होता है।

उदाहरण - ''गोल्ड तो गोल्ड होता है, चाहे वो छोरा लावे या छोरी।''

(दंगल)

''टेंशन लेने का नहीं, देने का।''

(मुन्ना भाई MBBS)

हिंदी फिल्मों के गाने फिल्मों से भी अधिक लोकप्रिय होते हैं, जिनमें लोकभाषा के शब्दों, अलंकारों और सभी रसों का सुंदर प्रयोग होता है, जिसके कारण इनकी भाषा अत्यंत प्रभावशाली हो जाती है।

उदाहरण-

आला रे आला (मराठी)

रिंद पोश माल (कश्मीरी)

अलंकार

कजरारे कजरारे (अनुप्रास)

चौदहवीं का चाँद हो (रूपक)

(ख) टेलीविजन : टेलीविजन और विशेष रूप से न्यूज चैनल की भाषा भी हिंदी की समृद्धि का प्रतीक है। इसकी भाषा का शब्द चयन, शैली, कथ्य आदि अत्यंत उच्च कोटि के होते हैं।

उदाहरण-

''देश का गौरव भविष्य की आशा

जन जन को जोड़ने वाली जनता की भाषा

हिंदी की चुनौतियों को समझने के लिए

हम आप सबका स्वागत करते है। दिल्ली सरकार एवं ABP न्यूज की खास प्रस्तुति 'हिंदी उत्सव' में।''

ए. बी. पी. न्यूज

न्यूज चैनलों के खबरों के शीर्षक के उदाहरण-

(i) रामलीला मैदान पर महाभारत

(ii) बादलों से बरसी बर्बादी

(iii) केरल के साथ, करोड़ों हाथ

इसके अतिरिक्त टेलीविजन पर प्रसारित होने वाले अन्य कार्यक्रम भी हिंदी को समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

जैसे- धारावाहिक, रियलिटी शो, हिंदी के स्पोर्ट्स चैनल पर खेलों का वर्णन इत्यादि। सुनील गावस्कर, संजय मांजरेकर, सौरव गांगुली, राहुल द्रविड, वी.वी.एस. लक्ष्मण जैसे अहिंदी भाषी जब हिंदी में कमेंट्री करते हैं तो हमारा मस्तक गर्व से उन्नत हो जाता है।

अंतत: हम कह सकते है कि हिंदी भाषा की समृद्धि में टेलीविजन भी मुख्य सहयोगी है, जो इसे वैश्विक मंच प्रदान कर रहा है।

(ग) विज्ञापन की हिंदी : संप्रेषण का एक बुनियादी तत्व है- शब्द। इन शब्दों के रोचक संगठन से 'विज्ञापन' जनसंचार का महत्वपूर्ण माध्यम बनकर उभरा है। विज्ञापन की भाषा संवादात्मक, काव्यात्मक, अनुपम एवं सरल होती है। 30 सेकेण्ड के विज्ञापन में वस्तु या उत्पाद का नाम, उसकी विशेषता, विज्ञापन-वस्तु के प्रति इच्छा जागृत करना तथा विज्ञापन को रोचक ढंग से कहना होता है। हिंदी भाषा में विज्ञापन रोजगार के अवसर उत्पन्न करने का सशक्त जरिया है।

''यह हिंदी के बाजार का, उसकी जनसंख्या की ताकत है, जो विज्ञापन खींचती है। यह मामूली बात नहीं, अकेले इस तत्व ने हिंदी की संचार क्षमता को जिस तेजी से बदला, किसी अन्य तत्व ने नहीं।''

(पचौरी 19)

इसमें ऐसे शब्दों का समावेश होता है, जिसे आम जनता समझ सके।

उदाहरण –

(i) पुश करो, खुश रहो

(ii) श्री जंगरोधक सीमेंट – घर की ढाल सालों साल

श्रव्य माध्यम : श्रव्य माध्यम की हिंदी संदेशात्मक तो होती ही है, इसमें ऐसे शब्दों का समावेश होता है; जिसे आम जनता समझ सके।

सामाजिक संचार माध्यमों की हिंदी : विज्ञापन और तकनीक के इस युग में हिंदी सिर्फ ज्ञान–विज्ञान, साहित्य और जनसंचार के विभिन्न माध्यमों तक ही परिमित नहीं अपितु सामाजिक संचार माध्यमों जैसे फेसबुक, ह्वाट्सऐप, ट्विटर आदि पर भी खूब लोकप्रिय है। इसका जनक्षेत्र अत्यंत व्यापक है। इसकी हिंदी रोमन लिपि में भी लिखी जाती है तथा लाक्षणिक प्रयोग भी खूब होते है।

भाषा का एक रूप – **''स्ट्रेचर पर खिलाड़ी, गले में मेडल और दिल में इंडिया।''**

लोकतंत्र के महापर्व आम चुनाव में भी शब्दों का अद्‌भुत प्रयोग दर्शनीय होता है। हिंदी में चुनाव प्रचार के कुछ उदाहरण –

(i) क्यों पड़े हो चक्कर में, कोई नहीं है टक्कर में

(ii) अबकी बार मोदी सरकार

(iii) बिहार में बहार हो नीतीशे कुमार हो।

ये हिंदी भाषा के हृदय की विशालता है, जो हर पराई भाषा के शब्दों का हिंदीकरण कर स्वीकार कर लेती है। अंततः हम कह सकते हैं कि हिंदी के ये विविध रूप एक–दूसरे के पूरक हैं और हिंदी के शब्द–भंडार को समृद्ध बनाने में सहायक हैं।

निष्कर्ष :

भारतीयों को भारतीयता और मानव–मानव को आत्मीयता से जोड़ने वाली हिंदी आज लोकप्रियता के बल पर विश्व भाषा बनने की ओर अग्रसर है। यह वेब दुनिया का आधार भी बन चुकी है। इंटरनेट पर इसका प्रयोग उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है। विश्व भर की वेबसाइटें हिंदी को भी तवज्जो दे रही हैं। माइक्रोसॉफ्ट, गूगल, याहू जैसी विश्वस्तरीय कंपनियाँ अत्यंत व्यापक बाजार और भारी मुनाफे को देखते हुए हिंदी प्रयोग को बढ़ावा दे रही हैं। स्वाधीनता संग्राम में उल्लेखनीय भूमिका निभाकर भारतवासियों के हृदय में राष्ट्रीय अस्मिता की अमिट चाह जगानेवाली हिंदी अपने स्वर्णिम अतीत के साथ–साथ वर्तमान को भी गौरवान्वित कर रही है।

विदेशों में इसका प्रयोग इस बात का गवाह है कि उमंग, तरंग के लय में हिंदी इस युग में अपने अस्तित्व आरोहण का मृदंग बजाते हुए लोकप्रियता की बुलंदियों को स्पर्श कर रही है।

सुधीश पचौरी के अनुसार – ''जो हिंदी अब है वह 'दूसरी परंपरा' की हिंदी है। यह ग्लोबल गति में तकनीक और मुक्त बाजार की दोस्त बनने, लोगों के रोजगार के लायक बनने, 'कम्प्यूटर–मित्र बनने,' फोंट सुलझाने की, केन्द्रीय संचार समस्या से जूझती आकुल–व्याकुल हिंदी है। यह अपनी दैनिक समस्याओं से दैनिक ढंग से निपटती हिंदी है।''

(पचौरी 58)

हिंदी सिर्फ भावनाओं की नहीं बाजार की भी भाषा बन चुकी है। बाजारवाद के साथ–साथ इसका भी विस्तार हो रहा है।

शताब्दियों पुरानी सार्वभौमिकता तथा भारतीय संस्कृति को धारण करने की अद्‌भुत क्षमता वाली हिंदी अभिव्यक्ति का सर्वश्रेष्ठ माध्यम है। चाहे–अनचाहे वे शक्तियाँ भी हिंदी की सत्ता को स्वीकार कर रही हैं और इसे अपनी प्रगति का माध्यम बना रही हैं, जो कल तक हिंदी को पिछड़े हुए समाज की भाषा मानती थीं।

हिंदी के प्रगति पथ में बाधाएँ : ऐसा नही है कि हिंदी के विकास का मार्ग निष्कंटक रहा है। इसके प्रगति–पथ की प्रमुख बाधा लोगों की मानसिकता है, जो इसे उपेक्षा और तिरस्कार से देखती है।

हिंदी की अन्य समस्या यह है कि शासन के अनेक निकायों, विधायिका और कार्यपालिका में अंग्रेजी का प्रयोग गौरव सूचक बनता जा रहा है। इसकी समस्या पारिभाषिक शब्दावली की भी है। हिंदी की एक और समस्या प्रचार–प्रसार की है, जिसका समाधान है हिंदी को शिक्षा, शासन, विधि, जन–सामान्य व्यवहार आदि क्षेत्रों में लेखन का आधार

बनाना। जबतक लोगों में जागरूकता नहीं होगी, तब तक यह प्रसार असम्भव है।

इंटरनेट पर हिंदी भाषा का विस्तार व्यापक स्तर पर हो रहा है। लेकिन प्रयोगकर्त्ता की अपेक्षा सामग्री कम उपलब्ध है। इस हेतु सॉफ्टवेयर विकसित करने की आवश्यकता है। हालांकि यह विस्तार शुरू हो चुका है, लेकिन रफ्तार बहुत धीमी है।

हिंदी के बदलते स्वरूप के साथ इससे जुड़ी समस्याओं के समाधान भी आवश्यक हैं। त्रिभाषा-सूत्र तथा राजभाषा अधिनियम के अमल तथा बाजार की शक्तियों के फलस्वरूप जो हिंदी बनी है; उसका एक व्यापक मानचित्र रेखांकित होना चाहिए। समय की माँग के अनुसार शब्दकोश का निर्माण तथा उसमें नियमित संशोधन किया जाना चाहिए।

वर्तमान युग कम्प्यूटर का युग है। हिंदी के कई सॉफ्टवेयर विकसित हुए है किंतु अभी और भी सॉफ्टवेयर विकसित करने की आवश्यकता है।

शास्त्रों की मान्यता है कि जब कोई राष्ट्र अपनी भाषाओं को प्रधानता नहीं देता तो ऐसे देश या राष्ट्र का जीवन सदा के लिए अंधकारमय हो जाता है और वहाँ स्वतंत्रता या ज्ञान का सूर्य प्रदीप्त नहीं होता।

मातृभाषा के स्थान पर विदेशी भाषा का प्रयोग राष्ट्रीयता के प्रति अक्षम्य लापरवाही है। किसी भी कार्य को करने के लिए संकल्प की आवश्यकता होती है और संकल्प तब उत्पन्न होता है जब आवश्यकता का बोध होता है। भाषा संस्कृति की वाहक होती है। भारतीय संस्कृति की गरिमामयी परम्परा का संरक्षण हिंदी ही कर सकती है।

अत: आज एक नए संकल्प की आवश्यकता है, जो भाषायी आधार पर हो रहे भारत के विभाजन का उन्मूलन कर देश की सांस्कृतिक-एकता को मजबूत करे और इस कार्य का सफल संपादन सिर्फ और सिर्फ हिंदी ही कर सकती है।

संदर्भ स्रोत:

तिवारी, भोलानाथ. (1973). 'हिंदी भाषा : उद्‌भव, विकास और स्वरूप', हिंदी साहित्य का इतिहास, सं0 डॉ0 नगेंद्र, इन्दिरा पुरम : मयूर पेपर बैक्स, पृ०-06-16

द्विवेदी, महावीर प्रसाद. (2003). हिंदी भाषा, नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन।

पचौरी, सुधीश. (2012). हिंदी का नया जनक्षेत्र, नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन।

दैनिक हिंदुस्तान, 17 अगस्त, 2018